देवदूतों के सत्कार को नहीं भूल पायेंगे यात्री

ग्रामीणों ने रसद जुटाकर जगह-जगह लगाए भंडारे

अमर उजाला ब्यूरो

उत्तरकाशी। आपदा की इस घड़ी में भूखे-प्यासे यात्रियों की मदद की जरूरत है। ऐसे में सरकारी तंत्र भले ही आंकड़ेबाजी का खेल रहा हैं, लेकिन सेना के जवान व स्वयं संस्थाएं से जुड़े लोग यात्रियों के लिए देवदूत बने हुए हैं। यह लोग न केवल यात्रियों को सड़क मार्ग तक पहुंचाने का काम कर रहे हैं, बल्कि उनके पेट की आग भी बुझा रहे हैं।

गंगोत्री घाटी से जिंदगी और मौत से लड़कर देश-विदेश के यात्रियों का पैदल उत्तरकाशी आने का सिलसिला जारी है। रविवार को भी 300 से 400 यात्री पैदल पगडंडियों से होकर उत्तरकाशी पहुंचे। हर्षिल तथा मनेरी से हेलीकाप्टर से भी बड़ी संख्या में यात्री चिन्यालीसौड़ हैलीपैड पहुंचे।

चिन्यालीसौड़ हैलीपैड पर श्री स्वामी अचुतानंद महाराज भूमा निकेतन आश्रम हरिद्वार के 75 लोगों की टीम ने यात्रियों को खाने के पैकेट बांटे। उधर, हर्षिल, बगोरी, गणेशपुर, सुक्की आदि गांवों में भी राशन जुटाकर अपने-अपने गांवों में यात्रियों के लिए भंडारा लगाया। सेना व आईटीबीपी के जवान भी यात्रियों की मदद के लिए दिनरात एक किए हुए हैं। डीएफओ टिहरी डैम बीपी सिंह ने बताया कि रविवार को पैदल मार्ग से 300 से 400 तक यात्री उत्तरकाशी पहुंचे। वन कर्मियों ने यात्रियों को सड़क मार्ग तक पहुंचाने में भी पूरी मदद की।

मदद को बनाया साझा मंच

आपदा प्रभावितों की मदद के लिए सभी स्वैच्छिक संगठनों ने साझा मंच उत्तरकाशी आपदा प्रबंधन जन मंच बनाया है। हिमालय पर्यावरण जड़ी-बूटी एग्रो संस्थान के सचिव द्वारिका प्रसाद ने बताया कि मंच के माध्यम से आपदा प्रभावितों की मदद की जाएगी।

युवकों ने एकत्रित किया रसद

मानपुर गांव के उत्साही युवक गणेश, विरेंद्र, महेश, गिरीश, दीपक भी गंगोत्री मार्ग फंसे यात्रियों की मदद के लिए आगे हैं। इन युवकों ने अपने गांव से रसद के साथ ही 22 सौ रुपये की धनराशि एकत्रित की है। सोमवार को युवक गंगोत्री मार्ग पर डिडसारी गांव में यात्रियों के लिए भंडारे का आयोजन करेंगे।

चिन्यालीसौड़ हवाई पट्टी पर यात्रियों के लिए लंगर चलाते भूमा निकेतन आश्रम के स्वयंसेवी।